11/06/24 न तो वकील वादी उपस्थित। न ही वादीगण स्वयं उपस्थित। इनकी अनुपस्थित बाबत कोई कारण भी पेश हुआ नहीं हुआ। बार-बार आवाज लगवाई गई। अतः यह वादपत्र अदम पैरवी अदम हाजरी में खारिज किया जाता है।

पत्रावली निर्णय में शुमार होकर दाखिल दफ्तर हो।